



12077CH04

## चतुर्थः पाठः

### प्रजानुरञ्जको नृपः

प्रस्तुत पाठ महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश के प्रथम सर्ग से लिया गया है। इन आरम्भिक श्लोकों में कालिदास महान् रघुकुल के राजाओं के गुणों के वर्णन के माध्यम से संसार को यह बताने की चेष्टा करते हैं कि शासकों में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? राजा का मुख्य धर्म प्रजा का अनुरञ्जन करना है। राजा को प्रजा के कल्याण के लिए ही प्रजा से कर लेकर कोष एकत्रित करना चाहिये। कर-ग्रहण करने का उद्देश्य आपत्ति आने पर प्रजा का कष्टनिवारण करना होता है। राजा को विद्वान्, सत्यवादी, इन्द्रियनिग्रही तथा प्रजापालक होना चाहिए। इस संसार में वे ही राजवंश चिरकाल तक राज्य करते हैं, जिनमें रघुवंशी राजाओं के समान गुण पाए जाते हैं। कालिदास इस के माध्यम से न केवल भारत के अपितु विश्व के शासकों के समक्ष ये अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं। प्रजापालन, प्रजानुरञ्जन ही शासक का प्रमुख धर्म है—यह ध्वनि इससे प्रकट होती है।



त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।  
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥1॥

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।  
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥2॥

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।  
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः ॥3॥

वैवस्वतो मनुर्नाम माननीयो मनीषिणाम्।  
आसीन्महीक्षितामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव ॥4॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।  
दिलीप इव राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव ॥5॥

आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।  
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः ॥6॥

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।  
सहस्रगुणमुत्स्वष्टुमादत्ते हि रसं रविः ॥7॥

ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।  
गुणा गुणानुबन्धित्वात्तस्य सप्रसवा इव ॥8॥

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।  
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ॥9॥

द्वेष्योऽपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।  
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ॥10॥

स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।  
अनन्यशासनामुर्वी शशासैकपुरीमिव ॥11॥

### शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

|                 |   |                                                                                                 |
|-----------------|---|-------------------------------------------------------------------------------------------------|
| सम्भृतार्थानाम् | - | सम्भृतः अर्थः यैः तेषाम् बहुव्रीहि सञ्चिद्भनानाम्, धन इकट्ठा करने वाले (रघुवंशियों का)।         |
| मितभाषिणाम्     | - | मितं भाषन्ते ये ते तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, सीमितभाषणकर्तृणाम्, सीमित बोलने वाले (रघुवंशियों का)। |
| विजगीषूणाम्     | - | वि + जि + सन् + उ, ष.ब.व., विजयस्य-इच्छुकानाम्, विजय की इच्छा रखने वाले (रघुवंशियों का)।        |
| गृहमेधिनाम्     | - | गृहे मेधन्ते तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, दारपरिग्रहाणाम्, विवाह करने वाले (रघुवंशियों का)।           |
| विषयैषिणाम्     | - | विषयान् इच्छन्ति तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, भोगाभिलाषिणां, भोग की इच्छा रखने वाले (रघुवंशियों का)।  |
| तनुत्यजाम्      | - | तनुं त्यजन्ति तेषाम्, उपपद तत्पुरुष, देहत्यागिनाम्, शरीर का त्याग करने वाले (रघुवंशियों का)।    |
| अन्वयम्         | - | वंशम्, वंश के विषय में।                                                                         |
| तनुवाग्विभवः    | - | तनु वाक् एव विभवः यस्य सः बहुव्रीहि, स्वल्पवाणीप्रसारः, वाणी का थोड़ा वैभव।                     |
| चापलाय          | - | चपलस्यभावः, चपल + अण्, चापलम्, चपलता के लिए।                                                    |
| प्रचोदितः       | - | प्र + चुद् + क्त पु.प्र.ए.व., प्रेरितः, प्रेरणा किया हुआ।                                       |
| मनीषिणाम्       | - | मनषः ईषिणः मनीषिणः तेषाम् विदुषाम्, विद्वानों में।                                              |
| महीक्षिताम्     | - | महीं क्षियन्ति इति महीक्षितः तेषाम् क्षितीश्वराणाम्, राजाओं में।                                |
| प्रणवः          | - | ओङ्कारः, ओऽम् शब्द।                                                                             |
| छन्दसाम्        | - | वेदानाम्, वेदों का।                                                                             |

|                       |   |                                                                                                                     |
|-----------------------|---|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| अन्वये                | - | वंशे, वंश में।                                                                                                      |
| शुद्धिमति             | - | शुद्धि + मतप् पु. सप्तमी ए.व., शुद्धिरस्यास्ति इति शुद्धिमान् तस्मिन् (पवित्र वंश में)।                             |
| प्रसूतः               | - | प्र + सू + क्त, जातः, उत्पन्न हुआ।                                                                                  |
| राजेन्दुः             | - | राज्ञाम् इन्दुः, षष्ठी तत्पुरुष पु.प्र. ए.व., राजश्रेष्ठ, राजाओं में श्रेष्ठ।                                       |
| इन्दुः                | - | चन्द्रमाः, चन्द्रमा।                                                                                                |
| क्षीरनिधौ             | - | क्षीरसमुद्रे, क्षीर सागर में।                                                                                       |
| आकारसदृशप्रज्ञः       | - | आकारेण सदृशी प्रज्ञा यस्य सः, आकार के समान बुद्धि वाले।                                                             |
| प्रज्ञया सदृशागमः     | - | प्रज्ञया सदृशाः आगमाः यस्य सः, बहुव्रीहि, प्रज्ञया अनुरूपः शास्त्रपरिश्रमः, बुद्धि के अनुरूप शास्त्र का अभ्यास।     |
| आगमैः सदृशारम्भः      | - | शास्त्रैः सदृश आरम्भः, शास्त्रों के अनुसार (कर्म) आचरण करने वाला।                                                   |
| आरम्भसदृशोदयः         | - | आरम्भेण सदृशः उदयः यस्य सः, बहुव्रीहि, प्रारम्भ-सदृशसिद्धियुक्तः, प्रारम्भ के समान फल की सिद्धि वाला।               |
| भूत्यर्थम्            | - | भूत्यै इति, अर्थ के योग में चतुर्थी तत्पुरुष, वृद्ध्यर्थम्, (उन्नति) भलाई के लिए।                                   |
| बलिम्                 | - | करम्, कर को (टैक्स को)।                                                                                             |
| सहस्रगुणमुत्त्रष्टुम् | - | सहस्रधा दातुम्, हजार गुना देने के लिए।                                                                              |
| उत्त्रष्टुम्          | - | उद् + सृज् + तुमुन्, देने के लिए।                                                                                   |
| आदत्ते                | - | आ + दा, लट् प्र.पु. ए.व. गृह्णाति, ग्रहण करता है।                                                                   |
| श्लाघाविपर्ययः        | - | श्लाघाया विपर्ययः, षष्ठी तत्पुरुष, विकथनायाभावः, अपनी बड़ाई न करने वाला।                                            |
| गुणानुबन्धित्वात्     | - | गुणान् अनुबन्धन्ति, गुणानुबन्धिनः, तेषां भावः, तस्मात्, ज्ञानादिगुणानुसारित्वात्, ज्ञानादि गुणों के अनुकरण करने से। |
| सप्रसवा इव            | - | सोदरा इव, सहोदर के समान।                                                                                            |
| विनयाधानात्           | - | विनम्रताशिक्षणात्, विनम्रता आदि की शिक्षा देने से।                                                                  |

|                 |   |                                                                                                                             |
|-----------------|---|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| रक्षणात्        | - | त्राणात्, रक्षा करने के कारण से।                                                                                            |
| भरणात्          | - | पोषणात्, भरण-पोषण के हेतु से।                                                                                               |
| जन्महेतवः       | - | जन्मनः एव हेतवः, जन्ममात्रकर्तारः, जन्म मात्र देने के कारण।                                                                 |
| उरगुक्षता       | - | उरगेण क्षता, सर्प, साँप से काटी गई।                                                                                         |
| अङ्गुलीव        | - | अङ्गुली के समान।                                                                                                            |
| वेलावप्रवलयान्  | - | वेला एव वप्रवलयः यस्याः सा तां बहुव्रीहिः, समुद्र-कूलप्राकारायां, समुद्र का किनारा ही जिस नगर की प्रमुख दीवार का परकोटा है। |
| परिखीकृतसागराम् | - | परितः खाताः परिखाः, परिखाः कृताः सागराः यस्याः सा ताम्, समुद्र की चहरदीवारी को।                                             |
| अनन्यशासनाम्    | - | न अस्ति अन्यस्य शासनं यस्यां सा ताम्, बहुव्रीहिसमासः, न अन्यशासकेन शासिताम्, अन्य राजा के द्वारा शासन न की गई।              |
| उर्वीम्         | - | पृथिवीम्, पृथ्वी को।                                                                                                        |
| शशास            | - | शासनं कृतवान्, शासन किया।                                                                                                   |

### अभ्यासः

#### 1. एकपदेन उत्तरत-

- (क) केषाम् अन्वयः कालिदासेन विवक्षितः?
- (ख) रघुवंशिनः अन्ते केन तनुं त्यजन्ति?
- (ग) महीक्षिताम् आद्यः कः आसीत्?
- (घ) कासां पितरः केवलं जन्महेतवः?
- (ङ) कः प्रियः अपि त्याज्यः?
- (च) दिलीपः प्रजानां भूत्यर्थं कम् अग्रहीत्?
- (छ) राजेन्दुः दिलीपः रघूणामन्वये क्षीरनिधौ कः इव प्रसूतः?

#### 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) महाकविकालिदासेन वैवस्वतो मनुः महीक्षितां कीदृशः निगदितः?

- (ख) कालिदासः तनुवाग्विभवः सन् अपि तद्गुणैः कथं प्रचोदितः?  
 (ग) के तं (रघुवंशं) श्रोतुमर्हन्ति?  
 (घ) दिलीपस्य कार्याणाम् आरम्भः कीदृशः आसीत्?  
 (ङ) रविः रसं किमर्थम् आदत्ते?

3. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) सः प्रजानामेव भूत्यर्थं बलिम् अग्रहीत्।  
 (ख) प्रजानां विनयाधानात् सः पिता आसीत्।  
 (ग) मनीषिणां माननीयः मनुः आसीत्।  
 (घ) शुद्धिमति अन्वये दिलीपः प्रसूतः।  
 (ङ) पितरः जन्महेतवः आसन्।

4. अधोलिखितानां भावार्थं हिन्दी/आंग्ल/संस्कृत स्वभाषया लिखत-

- (क) प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।  
 (ख) आगमैः सदृशारम्भः आरम्भसदृशोदयः।  
 (ग) स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः।  
 (घ) अनन्यशासनामुर्वी शशासैकपुरीमिव।

5. अधोलिखितेषु विपरीतार्थमेलनं कुरुत-

|          |                 |
|----------|-----------------|
| यौवने    | चपलताम्         |
| मौनम्    | शासनम् न अकरोत् |
| त्याज्यः | अक्षता          |
| शशास     | ग्राह्यः        |
| क्षता    | वार्धके         |

6. अधोलिखितेषु प्रकृति-प्रत्यय-विभागः क्रियताम्-

आगत्य, उत्प्लष्टुम्, सम्मतः, त्याज्यः, शिष्टः

7. सन्धिम् सन्धि-विच्छेदं वा कुरुत-

तनुवाग्विभवोऽपि, योगेनान्ते, ताभ्यः + बलिम्, शशासैकपुरीमिव।

### 8. अधोलिखितस्य श्लोकद्वयस्य अन्वयं कुरुत-

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।

स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥

स वेलावप्रवल्यां परिखीकृतसागराम्।

अनन्यशासनामुर्वी शशासैकपुरीमिव॥

### 9. अधोलिखितेषु विशेषण-विशेष्ययोः मेलनं कुरुत-

|           |         |
|-----------|---------|
| माननीयः   | अङ्गुली |
| राजेन्दुः | आर्तस्य |
| जन्महेतवः | मनुः    |
| उरगक्षता  | दिलीपः  |
| तस्य      | पितरः   |

### योग्यताविस्तारः

‘रघुवंशम्’ महाकविकालिदासस्य रचनासु महाकाव्येषु गण्यते। साहित्यदर्पणे महाकाव्यस्य लक्षणमिदं प्राप्यते-‘सर्गबन्धो महाकाव्यम्’ एतस्मिन् देवः, उदात्तगुणयुक्तः, उच्चकुलोत्पन्नः क्षत्रियो वा नायको भवेत्। एकस्मिन् वंशे समुत्पन्नाः बहवो राजानोऽपि नायकाः भवितुम् अर्हन्ति। रसेषु शृङ्गारो, वीरः शान्तो वा रसः प्राधान्येन, शेषरसाः अङ्गरूपेण च प्रयुज्यन्ते। चतुर्विधपुरुषार्थानां धर्मार्थकाममोक्षाणां लाभः महाकाव्यस्य फलरूपेण स्वीकृतः। महाकाव्यस्य एकस्मिन् सर्गे एकस्यैव छन्दसः प्रयोगः, सर्गान्ते च छन्दसि परिवर्तनं इति महाकाव्यस्य लक्षणे निर्दिष्टम्। एतत् सर्वं रघुवंशमहाकाव्ये प्राप्यते। अनेन महाकविना प्रकृतेः चित्रणं स्वीये महाकाव्ये मुक्तभावेन मूर्तरूपेण कृतम्। अत्र आसूर्यात् अग्निवर्णं यावत् नृपाणां ग्राह्यगुणानां त्याज्यदोषाणां चोल्लेखः विद्यते। महाकाव्यमिदम् एकोनविंशतिसर्गेषु निबद्धमस्ति। कालिदासस्य द्वे महाकाव्ये रघुवंशम् कुमारसम्भवम्, नाटकत्रयं मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् खण्डकाव्येषु च मेघदूतम्, ऋतुसंहारञ्च विश्रुतानि।

